AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

उच्च शिक्षा में परिणाम–आधारित शिक्षा (ओबीई) की भूमिका

ORIGINAL ARTICLE

Authors

डॉ. सुनील कुमार सेन
प्राध्यापक
शिक्षा विभाग
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय
बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

लालबहादुर
शोधार्थी
शिक्षा विभाग
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय
बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली में परिणाम–आधारित शिक्षा (ओबीई) शहर में चर्चा का विषय बन गई है। कई कॉलेज इसे तेजी से लागू कर रहे हैं, क्योंकि इसे अमेरिका के लिए अपने अंतरराष्ट्रीय प्रतिद्वंद्वियों से आगे रहने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में देखा जाता है। तो, भारत में शिक्षा क्षेत्र पर ओबीई का क्या प्रभाव है? यहां ओबीई के बारे में चार महत्वपूर्ण तथ्य हैं जिन्हें हर किसी को समझना चाहिए और यह भारत में उच्च शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण क्यों है। परिणाम–आधारित शिक्षा (ओबीई) की अवधारणा में शैक्षिक दृष्टिकोण और सीखने का दर्शन दोनों शामिल हैं। इसका लक्ष्य उन विशिष्ट 'परिणामों' पर केन्द्रित करके एक व्यापक शैक्षणिक कार्यक्रम तैयार करना है जो कार्यक्रम पूरा करने पर सभी छात्रों से अपेक्षित हैं। यह दृष्टिकोण छात्रों की उपलब्धि को प्राथमिकता देने और इन परिणामों के आधार पर उनकी प्रगति को मापने के इर्द–गिर्द घूमता है। इन परिणामों में आम तौर पर ज्ञान, कौशल, योग्यता, दृष्टिकोण और समझ सहित विभिन्न प्रकार के तत्व शामिल होते हैं, जिन्हें छात्रों से विभिन्न उच्च शिक्षा अनुभवों में उनकी सफल भागीदारी के माध्यम से हासिल करने की उम्मीद की जाती है।

मुख्य शब्द

शिक्षा, परिणाम, योग्यता, दृष्टिकोण.

प्रस्तावाना

परिणाम–आधारित शिक्षा (ओबीई) एक शैक्षिक दृष्टिकोण है जो विशिष्ट शिक्षण परिणाम या वांछित परिणाम प्राप्त करने पर केंद्रित है। यह स्पष्ट उद्देश्यों को परिभाषित करने और इन पूर्व निर्धारित परिणामों को पूरा करने की उनकी क्षमता के आधार पर छात्रों की प्रगति का आंकलन करने के महत्व पर जोर देता है। ओबीई पारंपरिक फोकस को शिक्षण से सीखने की ओर स्थानांतरित करता है, क्योंकि यह यह सुनिश्चित करना चाहता है कि छात्र वास्तविक दुनिया के संदर्भों में सफल होने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और दक्षता हासिल करें। स्पष्ट रूप से परिभाषित परिणामों के साथ पाठ्यक्रम, निर्देश और मूल्यांकन को संरेखित करके, ओबीई का उद्देश्य छात्रों की समझ और ज्ञान के अनुप्रयोग के साथ–साथ उनकी महत्वपूर्ण सोच और समस्या–समाधान क्षमताओं को बढ़ाना है। यह शैक्षणिक

दृष्टिकोण छात्र–केंद्रित शिक्षा को भी बढ़ावा देता है, जहां शिक्षार्थी सक्रिय रूप से सीखने की प्रक्रिया में संलग्न होते हैं और अपनी शिक्षा का स्वामित्व लेते हैं। ओबीई शिक्षकों को ऐसी निर्देशात्मक रणनीतियाँ डिजाइन करने के लिए प्रोत्साहित करता है जो छात्रों की विविध आवश्यकताओं और सीखने की शैलियों को पूरा करती हैं, और अधिक समावेशी और प्रभावी शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देती हैं। यह निरंतर सुधार और प्रतिक्रिया के महत्व पर भी जोर देता है, क्योंकि शिक्षक और शिक्षक नियमित रूप से अपने निर्देश की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करते हैं और छात्रों की सफलता में सहायता के लिए आवश्यक समायोजन करते हैं। परिणामों पर ध्यान केंद्रित करके, ओबीई का लक्ष्य ऐसे स्नातक तैयार करना है जो न केवल अपने संबंधित क्षेत्रों में जानकार हों बल्कि तेजी से बदलती दुनिया में आगे बढ़ने के लिए आवश्यक कौशल और दक्षताओं से भी लैस हों।

परिणाम आधारित शिक्षा (ओबीई) क्यों?

परिणाम–आधारित शिक्षा एक छात्र–केंद्रित दृष्टिकोण है जो वांछित परिणामों या कौशल पर ध्यान केंद्रित करता है जो छात्रों को किसी पाठ्यक्रम या कार्यक्रम के अंत में हासिल करना चाहिए। ओबीई को अपनाने का उद्देश्य शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना, आलोचनात्मक सोच और समस्या–समाधान कौशल को बढ़ावा देना और आजीवन सीखने को प्रोत्साहित करना है। कुल मिलाकर, ओबीई सीखने के अनुभवों को डिजाइन करने, वितरित करने और मूल्यांकन करने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है जो कार्यक्रम के इच्छित परिणामों और लक्ष्यों के साथ संरेखित होता है। इसके अलावा, ओबीई यह सुनिश्चित करने के लिए निरंतर प्रतिक्रिया और मूल्यांकन के महत्व पर जोर देता है कि छात्र वांछित परिणामों की दिशा में प्रगति कर रहे हैं। यह फीडबैक शिक्षकों को उन क्षेत्रों की पहचान करने में मदद करता है जहां छात्रों को अतिरिक्त सहायता या मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है और तदनुसार अपनी शिक्षण रणनीतियों को समायोजित करते हैं। परिणाम–आधारित शिक्षा (ओबीई) एक शिक्षण और सीखने का दृष्टिकोण है जो वांछित परिणामों या कौशल पर जोर देता है जो छात्रों को पाठ्यक्रम या कार्यक्रम के अंत में हासिल करना चाहिए। यह एक छात्र–केंद्रित दृष्टिकोण है जो कक्षा में पढ़ाई जाने वाली सामग्री के बजाय सीखने के परिणामों पर ध्यान केंद्रित करता है। ओबीई सीखने के अनुभव को बढ़ाने और छात्र जुड़ाव में सुधार के लिए प्रौद्योगिकी और अन्य नवीन शिक्षण विधियों के उपयोग को भी बढ़ावा देता है। डिजिटल प्रौद्योगिकियों के आगमन के साथ, ओबीई अधिक सुलभ और कुशल हो गया है, जो शिक्षकों को वैयक्तिकृत शिक्षण अनुभव प्रदान करने में सक्षम बनाता है जो व्यक्तिगत शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करता है। ओबीई को अपनाने का मुख्य कारण शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना और यह सुनिश्चित करना है कि छात्र अपने भविष्य के करियर के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान प्राप्त करें। ओबीई सीखने के अनुभवों को डिजाइन करने, वितरित करने और मूल्यांकन करने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है जो कार्यक्रम के इच्छित परिणामों और लक्ष्यों के साथ संरेखित होता है। ओबीई को अपनाने का एक अन्य कारण छात्रों के बीच आलोचनात्मक सोच, समस्या–समाधान और आजीवन सीखने के कौशल को बढ़ावा देना है। ओबीई शिक्षकों को ऐसे सीखने के अनुभव डिजाइन करने के लिए प्रोत्साहित करता है जो छात्रों को गंभीर रूप से सोचने, ज्ञान को लागू करने और वास्तविक दुनिया की स्थितियों में समस्याओं को हल करने की चुनौती देता है।

उच्च शिक्षा में परिणाम–आधारित शिक्षा (ओबीई) की क्या भूमिका है ?

ओबीई न केवल शैक्षणिक ज्ञान बल्कि व्यावहारिक कौशल, महत्वपूर्ण सोच क्षमताओं और नैतिक मूल्यों के विकास को बढ़ावा देकर शिक्षा के लिए एक समग्र दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है। यह सर्वांगीण व्यक्तियों के विकास को बढ़ावा देता है जो न केवल अपने संबंधित क्षेत्रों में पारंगत हैं बल्कि समाज में सकारात्मक योगदान देने के लिए आवश्यक गुण भी रखते हैं। शैक्षिक उद्देश्यों को वास्तविक दुनिया के परिणामों के साथ जोड़कर, ओबीई शिक्षा और उद्योग के बीच की खाई को पाटने में मदद करता है। यह सुनिश्चित करता है कि स्नातकों के पास आवश्यक कौशल और दक्षताएं हों जो नियोक्ता आज के तेजी से विकसित हो रहे नौकरी बाजार में तलाश रहे हैं। यह न केवल स्नातकों की रोजगार क्षमता को बढ़ाता है बल्कि राष्ट्र की समग्र आर्थिक वृद्धि और विकास में भी योगदान देता है। ओबीई का एक प्रमुख लाभ यह है कि यह शिक्षार्थी–केंद्रित दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है, जहां

शिक्षण और मूल्यांकन प्रक्रियाएं प्रत्येक व्यक्तिगत छात्र की विशिष्ट आवश्यकताओं और हितों को पूरा करने के लिए तैयार की जाती हैं। यह व्यक्तिगत दृष्टिकोण यह सुनिश्चित करता है कि छात्र सक्रिय रूप से अपने स्वयं के सीखने में लगे हुए हैं और उन्हें इस बात की स्पष्ट समझ है कि उनसे क्या अपेक्षा की जाती है। इसके अलावा, ओबीई उच्च शिक्षा में पारदर्शिता और जवाबदेही की सुविधा प्रदान करता है। अपेक्षित सीखने के परिणामों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करके और मूल्यांकन के लिए एक व्यवस्थित दृष्टिकोण प्रदान करके, ओबीई छात्रों, शिक्षकों और नीति निर्माताओं सहित हितधारकों को शैक्षिक कार्यक्रमों की गुणवत्ता और प्रभावशीलता की स्पष्ट समझ प्रदान करता है। यह पारदर्शिता सुनिश्चित करती है कि शैक्षणिक संस्थान अपने द्वारा प्रदान की जाने वाली शिक्षा के लिए जवाबदेह हों और उच्च शिक्षा मानकों के समग्र सुधार में योगदान दें। परिणाम–आधारित शिक्षा (ओबीई) ज्ञान, कौशल और क्षमताओं को स्पष्ट रूप से परिभाषित करने और मापने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करके उच्च शिक्षा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जिसे छात्रों से उनकी शैक्षिक यात्रा के अंत तक हासिल करने की उम्मीद की जाती है। ओबीई पारंपरिक इनपुट–आधारित शिक्षण विधियों से ध्यान हटाकर सीखने के वांछित परिणामों पर जोर देता है। निष्कर्ष में, परिणाम–आधारित शिक्षा (ओबीई) शिक्षार्थी–केंद्रित दृष्टिकोण प्रदान करके, शैक्षिक उद्देश्यों को वास्तविक दुनिया के परिणामों के साथ संरेखित करके, समग्र विकास को बढ़ावा देने, निरंतर सुधार और मूल्यांकन को बढ़ावा देने और पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करके उच्च शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ओबीई न केवल शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाता है बल्कि छात्रों को उनके भविष्य के करियर में सफलता के लिए तैयार करता है और समाज के समग्र विकास में योगदान देता है। ओबीई का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू इसका निरंतर सुधार और मूल्यांकन पर जोर देना है। छात्रों की प्रगति की नियमित निगरानी और मूल्यांकन करके, शिक्षक ताकत वाले क्षेत्रों और उन क्षेत्रों की पहचान कर सकते हैं जिनमें सुधार की आवश्यकता है। यह यह सुनिश्चित करने के लिए लक्षित हस्तक्षेप और निर्देशात्मक समायोजन की अनुमति देता है कि छात्र वांछित सीखने के परिणामों को पूरा करने के लिए ट्रैक पर हैं।

संस्थानों को परिणाम आधारित शिक्षा (ओबीई) का पालन करने की आवश्यकता क्यों है?

2014 में नेशनल बोर्ड ऑफ एक्रिडिटेशन (एनबीए) को स्थायी हस्ताक्षरकर्ता का दर्जा दिए जाने के साथ वाशिंगटन समझौते में भारत का शामिल होना, भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर माना जाता है। इसका मतलब यह है कि भारतीय इंजीनियरिंग स्नातक अब समझौते पर हस्ताक्षर करने वाले किसी भी देश में काम करने के पात्र हैं। एनबीए से मान्यता प्राप्त करने के लिए, भारतीय इंजीनियरिंग संस्थानों को परिणाम आधारित शिक्षा (ओबीई) मॉडल का पालन करना होगा। परिणामस्वरूप, एनबीए द्वारा मान्यता प्राप्त किसी भी इंजीनियरिंग संस्थान को ओबीई मॉडल का पालन करना होगा। इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद (नैक) ने भी इस पद्धति को अपनाया है, जिससे ओबीई को मान्यता के लिए एक मानक बना दिया गया है।

ओबीई मॉडल तीन मापदंडों में स्नातकों की प्रगति को मापता हैः

- कार्यक्रम के परिणाम (पीओ)।
- कार्यक्रम शैक्षिक परिणाम (पीईओ)।
- पाठ्यक्रम के परिणाम (सीओ)।

कार्यक्रम के परिणाम (पीओ) व्यापक विवरण हैं जो वांछित विशेषताओं, दक्षताओं, योग्यताओं और ज्ञान को परिभाषित करते हैं जो एक अकादमिक समुदाय सामूहिक रूप से मानता है कि उसके छात्रों को संस्थान में एक विशिष्ट कार्यक्रम के भीतर अपनी शैक्षिक यात्रा के माध्यम से हासिल करना चाहिए। ये पीओ उन विशिष्ट कौशलों और समझ के स्पष्ट संकेत के रूप में कार्य करते हैं जो छात्रों से संस्थान में अपनी पढ़ाई पूरी होने पर प्राप्त होने की उम्मीद की जाती है। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि कार्यक्रम के परिणाम किसी विशेष शैक्षणिक अनुशासन या विषय वस्तु तक सीमित नहीं हैं, बल्कि इसमें क्षमताओं और दक्षताओं का एक समग्र समूह शामिल है जो अध्ययन के विशिष्ट क्षेत्रों से परे हैं। जब छात्र किसी संस्थान में दाखिला लेते हैं, तो वे विभिन्न पृष्ठभूमियों, संस्कृतियों और

अनुभवों से आते हैं। लक्ष्य उनके लिए संस्थान में अध्ययन के दौरान अपने दृष्टिकोण का विस्तार करना, अपने मौजूदा कौशल को बढ़ाना और नए सीखना है। इससे न केवल उन्हें उनकी शिक्षा और भविष्य के करियर में सहायता मिलने की उम्मीद है, बल्कि उनकी सामाजिक भूमिकाओं में भी योगदान मिलेगा। पीओ संस्थान के दृष्टिकोण, मिशन और मूल मूल्यों के साथ जुड़े हुए हैं। पीओ को केवल सिखाया नहीं जाता है, बल्कि सार्थक अनुभवों और चिंतनशील सीखने की प्रक्रियाओं के माध्यम से विकसित किया जाता है। प्रत्येक छात्र का पीओ अद्वितीय है, लेकिन ऐसे सामान्य क्षेत्र हैं जिन पर संस्थान अपने छात्रों के विकास में जोर देता है। इन क्षेत्रों को संस्थान में रहते हुए प्रत्येक छात्र के शुरुआती बिंदु, प्रगति और अनुभवों से आकार दिया जाएगा।

किसी शैक्षणिक संस्थान का पीओ, या प्रोग्राम आउटकम, एक विशेष क्षेत्र और अध्ययन के स्तर में उसके स्नातकों की शैक्षणिक उपलब्धियों का प्रतीक है। इससे उनके भविष्य के करियर और समाज पर प्रभाव पड़ सकता है। पीओ की प्रासंगिकता उनके प्रारंभिक अधिग्रहण से आगे बढ़ सकती है, जो दुनिया में चल रही शिक्षा और भागीदारी के लिए एक रूपरेखा के रूप में काम कर सकती है।

कार्यक्रम के परिणामों के उदाहरणः

- किसी विषय विशेष के बारे में बहुत कुछ जानना।
- आलोचनात्मक सोच समस्याओं का पता लगाने और समाधान खोजने के लिए अपने मस्तिष्क का उपयोग करने जैसा है।
- टीम वर्क और संचार कौशल।
- कैरियर और नेतृत्व तत्परता।
- अंतर–सांस्कृतिक और नैतिक योग्यता।
- आत्म–जागरूकता और भावनात्मक बुद्धिमत्ता।
- सभी शैक्षणिक और बौद्धिक प्रयासों में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए समर्पण, जिसमें आलोचनात्मक निर्णय लेने की क्षमता शामिल है।
- **रचनात्मकताः** बौद्धिक, पेशेवर और सामाजिक चुनौतियों के लिए रचनात्मक और प्रभावी प्रतिक्रियाओं को विकसित करने की क्षमता।
- **नैतिक अभ्यासः** सामाजिक और व्यावसायिक प्रथाओं में स्थिरता और उच्च नैतिक मानकों के लिए प्रतिबद्धता.
- **एक अनुशासन का ज्ञानः** पेशेवर और सामुदायिक सेटिंग्स में एक सुचारू संक्रमण और योगदान को सक्षम करने के लिए एक अनुशासन की कमान
- **आजीवन सीखनाः** सूचना साक्षरता और स्वायत्त, स्व–प्रबंधित सीखने के माध्यम से परिवर्तन के प्रति उत्तरदायी होने, अभ्यास में पूछताछ और चिंतनशील होने की क्षमता।
- **संचार और सामाजिक कौशलः** पेशेवर और सामुदायिक सेटिंग्स में व्यक्तियों के साथ और टीमों के भीतर संवाद और सहयोग करने की क्षमता.
- **सांस्कृतिक क्षमताः** वैश्विक और स्थानीय सेटिंग्स दोनों में विविध सांस्कृतिक और स्वदेशी दृष्टिकोणों के साथ जुड़ने की क्षमता।

कार्यक्रम शैक्षिक परिणाम (पीईओ) व्यापक बयानों के रूप में कार्य करते हैं जो पेशेवर और व्यावसायिक उपलब्धियों को रेखांकित करते हैं जो एक कार्यक्रम अपने स्नातकों को सुसज्जित करने का प्रयास करता है। ये परिणाम संभावित छात्रों, पूर्व छात्रों, नियोक्ताओं, स्थानांतरण संगठनों और यहां तक कि छात्र प्रायोजकों जैसी बाहरी संस्थाओं सहित हितधारकों की एक विस्तृत श्रृंखला के लिए महत्वपूर्ण हैं। किसी भी क्षेत्र में पाठ्यक्रम विकसित करते

समय, फीडबैक और सर्वेक्षण के माध्यम से विभिन्न हितधारकों से अंतर्दृष्टि और दृष्टिकोण इकट्ठा करना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, विभिन्न विषय क्षेत्रों में विशिष्ट निष्कर्ष निकालने के लिए प्रासंगिक पेशेवर निकायों, संगठनों और शैक्षणिक संस्थानों से मिली जानकारी पर विचार करना महत्वपूर्ण है।

पाठ्यक्रम परिणाम (सीओ) मात्रात्मक कारक हैं जो प्रत्येक सेमेस्टर में किए गए प्रत्येक पाठ्यक्रम के लिए ब्लूम के वर्गीकरण के विभिन्न स्तरों में प्रत्येक छात्र के प्रदर्शन का आकलन करते हैं। संस्थान के पास पूरे कार्यक्रम में उम्मीदवारों के मूल्यांकन की पद्धति निर्धारित करने का अधिकार है। पाठ्यक्रम के परिणामों को मापने के लिए विभिन्न मूल्यांकन उपकरण उपलब्ध हैं, जिनमें मध्य–सेमेस्टर और अंतिम–सेमेस्टर परीक्षा, ट्यूटोरियल, असाइनमेंट, प्रोजेक्ट कार्य, प्रयोगशालाएं, प्रस्तुतियाँ, नियोक्ताओं और पूर्व छात्रों से प्रतिक्रिया, और बहुत कुछ शामिल हैं। ये पाठ्यक्रम परिणाम उनकी प्रासंगिकता के आधार पर स्नातक विशेषताओं और कार्यक्रम परिणामों के साथ संरेखित होते हैं। यह मूल्यांकन ढांचा संस्थानों को कार्यक्रम की प्रभावशीलता का आंकलन करने में सक्षम बनाता है। कार्यक्रम के शैक्षिक उद्देश्यों को नियोक्ता संतुष्टि सर्वेक्षण, पूर्व छात्र सर्वेक्षण जैसे वार्षिक सर्वेक्षणों और प्लेसमेंट रिकॉर्ड का विश्लेषण करके मापा जाता है।

रचनात्मक संरेखण शिक्षण का एक दृष्टिकोण है जो छात्रों के वांछित सीखने के परिणामों पर ध्यान केंद्रित करता है। कोई भी शिक्षण शुरू होने से पहले, इन सीखने के परिणामों को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया जाता है। फिर इन परिणामों को प्रभावी ढंग से प्राप्त करने और उपलब्धि के स्तर को मापने के लिए शिक्षण और मूल्यांकन विधियों को सावधानीपूर्वक डिजाइन किया जाता है। यह ढाँचा यह सुनिश्चित करने के लिए शिक्षण और मूल्यांकन में समायोजन की भी अनुमति देता है कि वांछित परिणाम और मानक पूरे हों। रचनात्मक संरेखण का उपयोग करके, शिक्षक एक सीखने का माहौल बनाने में सक्षम होते हैं जो छात्रों की समझ का समर्थन करता है और पाठ्यक्रम में क्या शामिल किया जाएगा या इसका मूल्यांकन कैसे किया जाएगा, इसके बारे में किसी भी भ्रम से बचा जाता है। इस पेपर में सीखने और मूल्यांकन की गुणवत्ता में सुधार के लिए रचनात्मक संरेखण के महत्व पर जोर दिया गया है। पेपर में वर्णित अध्ययन ने प्रभावी शिक्षण को बढ़ावा देने और गहन छात्र सीखने की सुविधा के लिए रचनात्मक संरेखण के सिद्धांतों को लागू किया। इसके अतिरिक्त, यह एक विशिष्ट पाठ्यक्रम इकाई के लिए मूल्यांकन मानदंड और रूब्रिक्स को डिजाइन करने में रचनावादी संरेखण के उपयोग की पड़ताल करता है।

शिक्षण और अधिगम एक संपूर्ण प्रणाली में होता है, जो कक्षा, विभागीय और संस्थागत स्तरों को गले लगाता है। एक खराब प्रणाली वह है जिसमें घटक (पाठ्यक्रम, शिक्षण और मूल्यांकन कार्य) एकीकृत नहीं होते हैं, और उच्च–स्तरीय सीखने का समर्थन करने के लिए तैयार नहीं होते हैं। ऐसी प्रणाली में, केवल 'अकादमिक' छात्र उच्च–क्रम सीखने की प्रक्रियाओं का उपयोग करते हैं। एक अच्छी प्रणाली में, शिक्षण और मूल्यांकन के सभी पहलुओं को उच्च–स्तरीय सीखने का समर्थन करने के लिए ट्यून किया जाता है, ताकि सभी छात्रों को उच्च–क्रम सीखने की प्रक्रियाओं का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके।बिग्स (1999) में कहा गया है कि अच्छे शिक्षण का ध्यान इस बात पर होना चाहिए कि छात्र ज्ञान, कौशल और दक्षताओं के साथ क्या कर रहे हैं, क्योंकि सीखना केवल सुनने के माध्यम से नहीं होता है, कार्रवाई की भी आवश्यकता होती है (फेल्डर, 1997)। सीखना एक जटिल वातावरण में होता है और इस प्रणाली के भीतर बातचीत करने वाले कई कारक होते हैं जैसे कि छात्रों की विशेषताएं, शिक्षण विधियां, पाठ्यक्रम, सीखने के उद्देश्य और संस्थागत सेटिंग (शुएल, 1986)। शुएल के अनुसार, यदि शिक्षक चाहते हैं कि छात्र अर्थ को समझने पर ध्यान केंद्रित करें, विश्लेषण और संश्लेषण जैसे उच्च–स्तरीय संज्ञानात्मक कौशल विकसित करने पर, तो सीखने की गतिविधियां जो शिक्षक डिजाइन और मूल्यांकन कार्यों को डिजाइन करते हैं, उन उद्देश्यों के अनुरूप होना चाहिए।

अच्छे शिक्षण का ध्यान इस बात पर होना चाहिए कि छात्र ज्ञान, कौशल और दक्षताओं के साथ क्या कर रहे हैं, क्योंकि सीखना केवल सुनने के माध्यम से नहीं होता है, कार्रवाई की भी आवश्यकता होती है (फेल्डर, 1997)। सीखना एक जटिल वातावरण में होता है और इस प्रणाली के भीतर बातचीत करने वाले कई कारक होते हैं जैसे

कि छात्रों की विशेषताएं, शिक्षण विधियां, पाठ्यक्रम, सीखने के उद्देश्य और संस्थागत सेटिंग (शुएल, 1986)। शुएल के अनुसार, यदि शिक्षक चाहते हैं कि छात्र अर्थ को समझने पर ध्यान केंद्रित करें, विश्लेषण और संश्लेषण जैसे उच्च–स्तरीय संज्ञानात्मक कौशल विकसित करने पर, तो सीखने की गतिविधियां जो शिक्षक डिजाइन और मूल्यांकन कार्यों को डिजाइन करते हैं, उन उद्देश्यों के अनुरूप होना चाहिए।

परंपरागत रूप से, पाठ्यक्रम का डिजाइन यह निर्धारित करने पर केंद्रित होता है कि कौन सी सामग्री पढ़ाई जानी चाहिए, इसे कैसे प्रस्तुत किया जाना चाहिए और इसका मूल्यांकन कैसे किया जाना चाहिए। इस दृष्टिकोण ने शिक्षक को प्राथमिकता दी और सामग्री को कवर करने पर ध्यान केंद्रित किया। हालाँकि, पाठ्यक्रम डिजाइन में अधिक छात्र–केंद्रित दृष्टिकोण की ओर बदलाव हुआ है, जो सीखने और ज्ञान, कौशल और दक्षताओं के अधिग्रहण पर जोर देता है। हालाँकि परीक्षण का उपयोग अक्सर सीखने का आकलन करने के लिए किया जाता है, लेकिन इसकी सीमाएँ हैं क्योंकि यह छात्रों की विविध सीखने की शैलियों, पृष्ठभूमि, रुचियों और आवश्यकताओं को ध्यान में नहीं रखता है। जैसे–जैसे उच्च शिक्षा अधिक विविध होती जा रही है, शिक्षकों के लिए ऐसे आंकलन का उपयोग करना महत्वपूर्ण है जो छात्र विविधता के प्रति अधिक प्रतिक्रियाशील हों और महत्वपूर्ण सोच और समस्या–समाधान जैसे उच्च–क्रम के संज्ञानात्मक कार्यों को प्रोत्साहित करें। ये मूल्यांकन छात्रों की जरूरतों की गहरी समझ प्रदान करके और सीखने में आने वाली बाधाओं पर काबू पाने में उनका समर्थन करके शिक्षकों और छात्रों दोनों को लाभान्वित कर सकते हैं।

निष्कर्ष

ओबीई विशिष्ट शिक्षण परिणामों की उपलब्धि के आधार पर छात्रों के प्रदर्शन के मूल्यांकन को भी बढ़ावा देता है। यह सुनिश्चित करता है कि छात्र न केवल ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं बल्कि इसे वास्तविक दुनिया के संदर्भों में लागू करने की अपनी क्षमता का प्रदर्शन भी कर रहे हैं। निरंतर मूल्यांकन और फीडबैक के माध्यम से, ओबीई छात्रों को अपनी प्रगति की निगरानी करने और अपने सीखने के परिणामों को बेहतर बनाने के लिए आवश्यक समायोजन करने में सक्षम बनाता है। इसके अलावा, ओबीई एक शिक्षार्थी–केंद्रित दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है, जहां छात्र अपने लक्ष्य निर्धारित करने और अपने सीखने के पथ निर्धारित करने में सक्रिय रूप से शामिल होते हैं। यह छात्रों को अपनी शिक्षा का स्वामित्व लेने और आजीवन सीखने वाला बनने का अधिकार देता है। जिम्मेदारी और आत्म–प्रेरणा की भावना पैदा करके, ओबीई छात्रों को नई चुनौतियों के अनुकूल बनने और जीवन भर निरंतर सीखने को अपनाने के लिए तैयार करता है। निष्कर्षतः, उच्च शिक्षा में परिणाम–आधारित शिक्षा (ओबीई) एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण है जो छात्र–केंद्रित शिक्षा, विशिष्ट शिक्षण परिणामों और आवश्यक कौशल के विकास पर जोर देता है। ओबीई को लागू करके, उच्च शिक्षा संस्थान अधिक आकर्षक और प्रासंगिक शिक्षण अनुभव प्रदान कर सकते हैं, छात्रों को भविष्य के लिए आवश्यक कौशल से लैस कर सकते हैं और आजीवन सीखने की संस्कृति को बढ़ावा दे सकते हैं। जैसे–जैसे शिक्षा परिदृश्य विकसित हो रहा है, ओबीई उच्च शिक्षा की गुणवत्ता और प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए एक मूल्यवान ढांचा बना हुआ है। ओबीई दृष्टिकोण अपनाकर, उच्च शिक्षा संस्थान छात्रों के लिए अधिक सार्थक और समग्र शिक्षण अनुभव को बढ़ावा दे सकते हैं। केवल व्याख्यानों और निष्क्रिय शिक्षा पर निर्भर रहने के बजाय, ओबीई सक्रिय भागीदारी और आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करता है। इससे छात्रों को समस्या–समाधान, सहयोग और संचार जैसे महत्वपूर्ण कौशल विकसित करने में मदद मिलती है, जो आज के तेजी से बदलते नौकरी बाजार में अत्यधिक मूल्यवान हैं। उच्च शिक्षा में ओबीई का एक और महत्वपूर्ण लाभ शिक्षा की समग्र गुणवत्ता और प्रासंगिकता को बढ़ाने की इसकी क्षमता है। वांछित शिक्षण परिणामों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करके, संस्थान अपने पाठ्यक्रम को उद्योग की मांगों और सामाजिक आवश्यकताओं के साथ संरेखित कर सकते हैं। यह सुनिश्चित करता है कि छात्र अपने चुने हुए करियर में उत्कृष्टता प्राप्त करने और समाज में सार्थक योगदान देने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल से लैस हैं। निष्कर्ष में, परिणाम–आधारित शिक्षा (ओबीई) उच्च शिक्षा में पारंपरिक शिक्षण विधियों से छात्र–केंद्रित शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करके, विशिष्ट शिक्षण परिणामों की प्राप्ति पर जोर देकर और भविष्य की सफलता के लिए आवश्यक कौशल के विकास को बढ़ावा देकर एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ओबीई शिक्षकों

को पाठ्यक्रम और निर्देशात्मक रणनीतियों को डिजाइन करने के लिए प्रोत्साहित करता है जो वांछित परिणामों के साथ संरेखित होते हैं, जिससे छात्रों को अपनी सीखने की यात्रा में सक्रिय रूप से शामिल होने की अनुमति मिलती है।

सन्दर्भ सूची

1. शर्मा, एस. (2022) भारतीय उच्च शिक्षा में परिणाम आधारित शिक्षा का महत्व, *शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका,* 45(3), पृ. 78–92।
2. गुप्ता, आर. एवं सिंह, एम. (2021) परिणाम आधारित शिक्षाः उच्च शिक्षा में गुणवत्ता सुधार का एक साधन, *शिक्षा और समाज,* 18(2)2, पृ. 123–140।
3. मिश्रा, पी. के. (2023) उच्च शिक्षा में परिणाम आधारित शिक्षा का कार्यान्वयनः चुनौतियाँ और अवसर, *नवाचार शिक्षा,* 7(1), पृ. 55''–70।
4. पटेल, ए. एवं जोशी, एन. (2020) परिणाम आधारित शिक्षा और रोजगार क्षमताः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, *कौशल विकास समीक्षा,* 12(4), पृ. 210–225।
5. वर्मा, डी. एवं कुमार, एस. (2022) उच्च शिक्षा में परिणाम आधारित शिक्षाः एक समीक्षात्मक दृष्टिकोण, *शैक्षिक प्रबंधन और नेतृत्व,* 30(2), पृ. 145–160।
6. ब्रिग्स, ए डेविड, (1988) ''अलहम्ब्रा हाईः एक 'उच्च सफलता' स्कूल, *शैक्षिक नेतृत्व,* 46(2) (अक्टूबर 1988)ः पृ. 10–11, ईजे 378 738।
7. ब्राउन, एलन एस (1988) ''परिणाम–आधारित शिक्षाः एक सफलता की कहानी, *शैक्षिक नेतृत्व,* 46 (2), अक्टूबर 1988, पृ. 12, ईजे 378 739।
8. मैकनेयर, ग्वेनिस (1993) परिणाम–आधारित शिक्षाः पुनर्गठन के लिए उपकरण, ओरेगन स्कूल स्टडी काउंसिल बुलेटिन, अप्रैल 1993, यूजीनः ओरेगन स्कूल स्टडी काउंसिल, पृ. 29।
9. रोथमैन, रॉबर्ट, (1993) ''हिसाब लेना'' *शिक्षा सप्ताह* 12(25), 17 मार्च, 1993, पृ. 72–75।

––==00==––